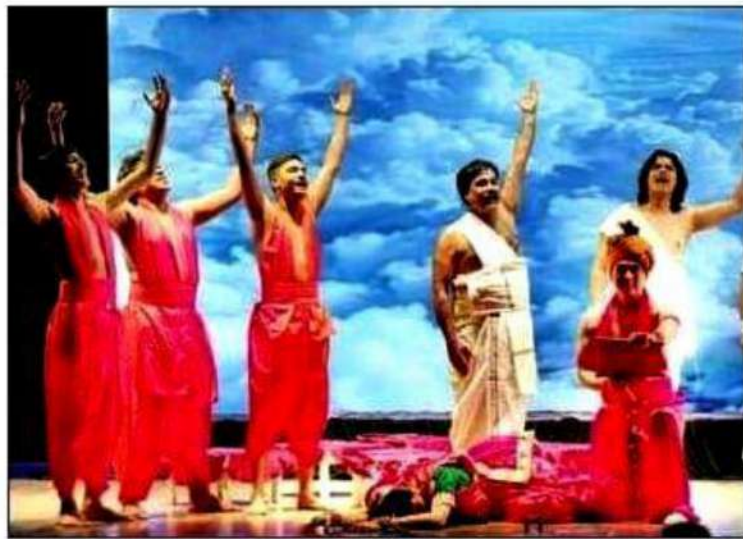


सत्ता, धर्म, परंपरा और मनुष्य के अस्तित्व का संघर्ष है पुरुषमेध



रिद्धिमा सभागार में नाटक का मंचन करते कलाकार। स्रोत: संस्था

संवाद न्यूज एजेंसी

बरेली। स्टेडियम रोड स्थित रिद्धिमा सभागार में रविवार को 'पुरुषमेध' नाटक का मंचन किया गया। साहित्यकार दूधनाथ सिंह का लिखा नाटक 'पुरुषमेध' हिंदी रंगमंच के उन महत्वपूर्ण नाटकों में है, जो नाटक के पात्र पुरुषवा के संघर्ष को केंद्र में रखकर व्यवस्था और विद्रोह के बीच के तनाव को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।

अंबुज कुकरेती और विनायक कुमार श्रीवास्तव निर्देशित नाटक की कथा युवराज पुरुषवा के राज्याभिषेक की तैयारी से शुरू होती है। पुरुषवा परंपरागत राजसत्ता और उन धार्मिक कर्मकांडों को स्वीकार करने से इन्कार कर देता है, जिनमें उसे शोषण और रक्तपात की छाया दिखाई देती है। अभिषेक के लिए

रिद्धिमा में किया गया दूधनाथ सिंह के लिखे नाटक का मंचन

आए पुरोहितों विभावक और कश्यप के साथ उसका टकराव इसी वैचारिक संघर्ष को सामने लाता है।

इसी ताने बाने पर यह नाटक पात्रों के माध्यम से आगे बढ़ता है। नाटक में पुरुषवा का चरित्र पंकज कुकरेती, इंद्र का चरित्र संजय सिंह ने बखूबी निभाया। अन्य कलाकारों ने अपनी अपनी भूमिकाओं में बेहतरीन अभिनय किया।

इस मौके पर एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, उषा गुप्ता, गुरु मेहरोत्रा, डॉ. प्रभाकर गुप्ता, डॉ. अनुज कुमार, डॉ. शैलेश सक्सेना, डॉ. रीता शर्मा आदि लोग मौजूद रहे।